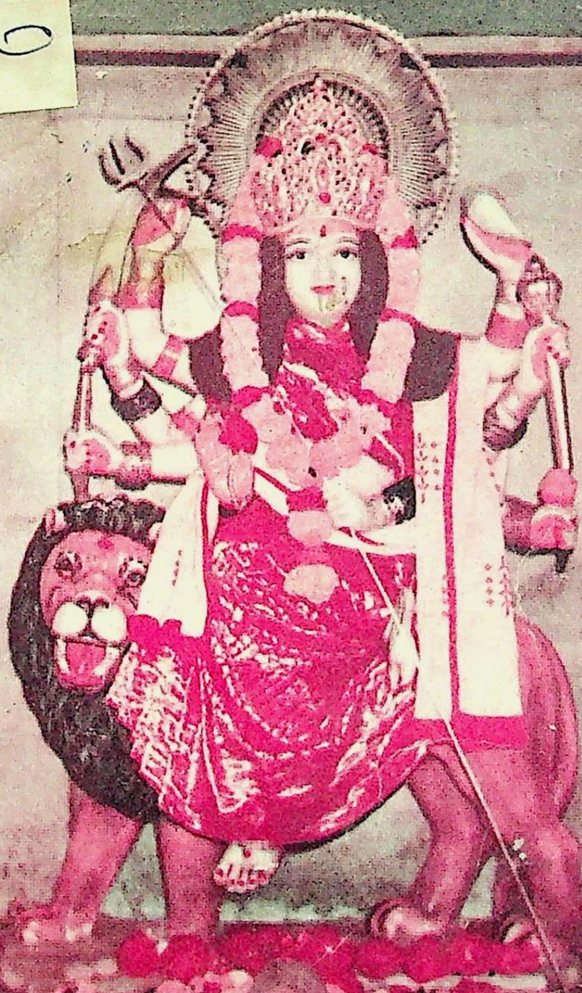
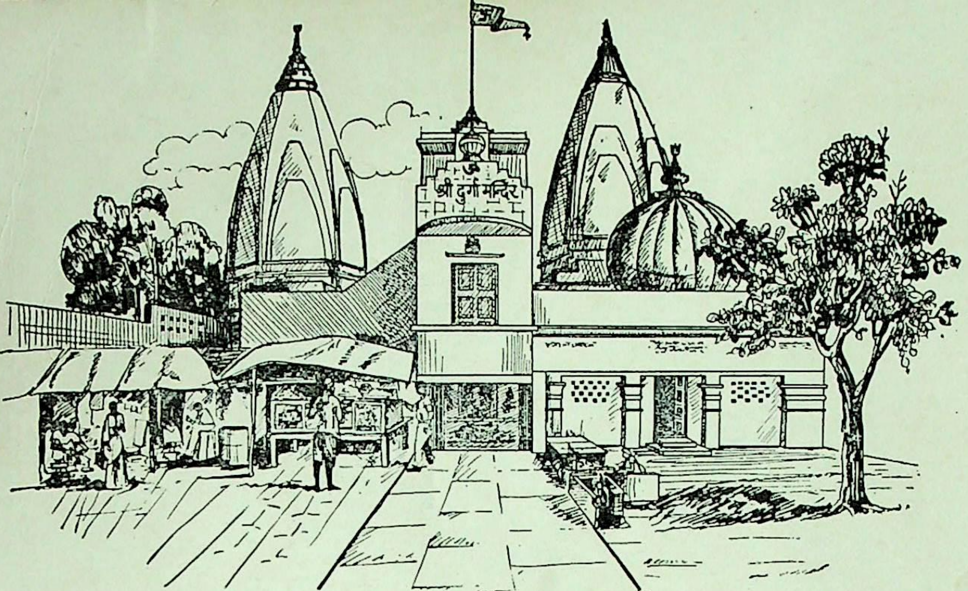


आजीवन सहयोगी सदस्यता योजना



कानपुर से लखनऊ की ओर जाने वाले पुराने मार्ग में गंगा जी का पुल पार करने के बाद शुक्लागंज, गंगाघाट, जिला उन्नाव आ जाता है। रेलवे क्रासिंग के बाद ढलान समाप्त होते ही बायीं ओर गंगाघाट पुलिस स्टेशन से प्रारम्भ हुई लगभग पांच-छै दूकानों के बाद ही 'श्री दुर्गा मन्दिर' स्थित है। प्राचीन समय से ही यह मन्दिर पुण्य एवं जाग्रत स्थल के रूप में ' जित रहा है।

॥ ॐ गं गणपतयेनमः ॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।

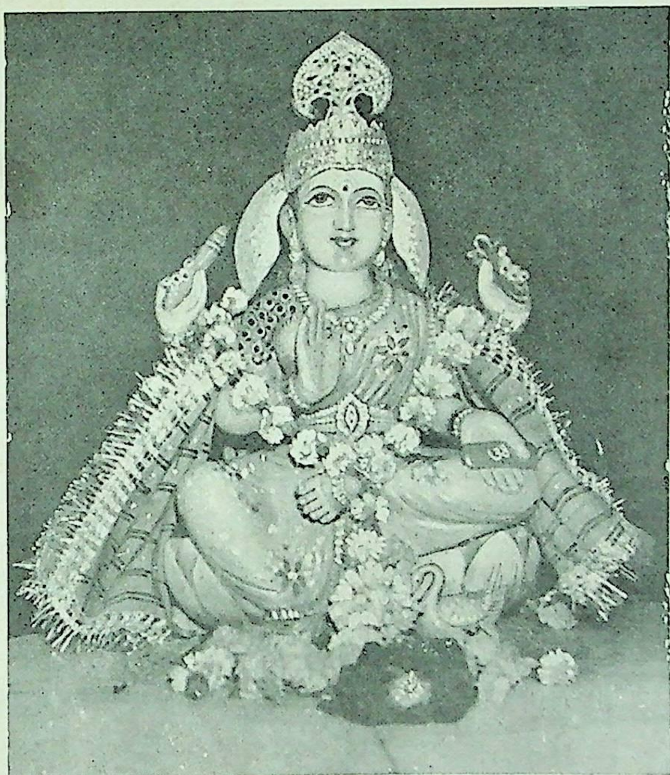


सन् १९६७ में श्री दुर्गा जी की प्रस्तर प्रतिमा (बड़ी माता जी) के दांयीं ओर श्री गणपति जी की लघु प्रतिमा की विधिवत स्थापना की गई ।

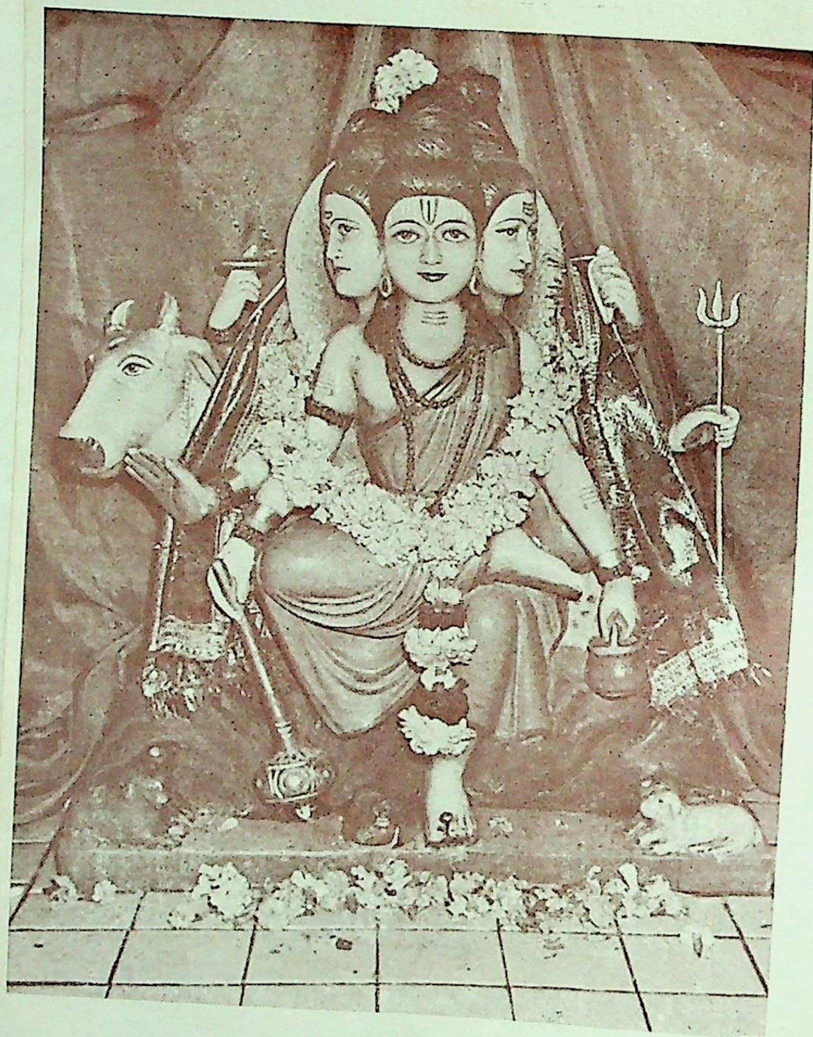


यज्ञशाला के बाहर बांयीं ओर के मण्डप में
स्थापित श्री संतोषी माता जी की प्रतिमा

त्वमेव संध्या गायत्री सावित्री च सरस्वती ।
ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री रक्ताश्वेता सितेतरा ।।



१९६७ में श्री दुर्गा जी की प्रतिमा (बड़ी माता जी) की बांयीं ओर स्थापित श्री गायत्री माता जी की लघु प्रतिमा ।



यज्ञशाला में पिछली दीवार से लगे मण्डप में स्थापित
श्री दत्तात्रेय जी की प्रतिमा।



शिव मन्दिर में स्थापित दक्षिणमुखी
हनुमान जी की प्रतिमा ।





शिव-मन्दिर का शिखर (दांये) एवं उसमें स्थापित प्राचीन शिवलिङ्ग ।

प्रस्तावना

कोई भी संस्था चाहे वह धार्मिक हो अथवा सामाजिक, उसका समुचित विकास व संचालन निःस्वार्थ भाव व त्याग की भावना के आधार पर ही सम्भव है। वर्तमान में नित्य विभिन्न प्रकार की धार्मिक संस्थायें बनती जा रही हैं जो धर्म की आड़ में मात्र अधिकाधिक धनोपार्जन का कार्य करती हैं। प्रचार व दिखावा तो बहुत किया जाता है, परन्तु उनके कार्यों में तदनुरूप यथार्थता का लोप होता है। यदि गहराई में उतरा जाय तो प्रायः यही मिलेगा कि तरह-तरह के प्रचार एवं उद्घोषणाओं के पीछे जनकल्याण की भावना के स्थान पर मात्र धन संचय की वृत्ति व स्वार्थ ही निहित होते हैं। आडम्बर बहुत है तथा आये दिन नाना प्रकार से जनता का विभिन्न रूपों में शोषण ही दृष्टिगत होता है। कथनी व करनी में बहुत अंतर पाया जाता है। धर्म के ठेकेदार जो स्वयं धर्मनिष्ठ नहीं हैं, विभिन्न रूपों में समाज को ठगने के विभिन्न तरीके अपनाते पाये जाते हैं। इसके विपरीत जनता में धर्म के प्रति आस्था तथा श्रद्धा की पराकाष्ठा ही पाई जाती है क्योंकि विभिन्न रूपों में ठगे जाने के उपरान्त भी जनता बड़े-बड़े धार्मिक अनुष्ठानों के समय अपनी धर्म के प्रति आस्था व श्रद्धा की सत्यनिष्ठता अपार जन समूहों में

एकत्र होकर तथा अपनी तन-मन-धन की सेवायें अर्पण कर प्रमाणित करती है।

श्री दुर्गा मन्दिर सेवा समिति, के मुख्य उद्देश्य जनता को आडम्बरों से मुक्त रखने, यथार्थता का सही परिचय देने, स्वार्थ की भावना को समाप्त करने व धर्म एवं अध्यात्म के प्रति अधिक आस्थावान होने, तथा जनता की श्रद्धा पर कुठाराघात होने से बचाने आदि के रखे गये हैं। यह संस्था उपरोक्त आधार पर क्रियाशील रहते हुये उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सतत् प्रयासरत् है।

प्रस्तुत पत्रिका में इस संस्था की कार्यप्रणाली आदि का परिचय देने का प्रयास समिति द्वारा किया गया है। इसका सही परिचय पत्रिका पढ़ लेने मात्र से नहीं हो सकता, अपितु मन्दिर में स्वयं उपस्थित होकर तथा अपने दायित्वों का निर्धारण करते हुए क्रियाशील रहकर सत्य स्वरूप का परिचय सम्भव है। संस्था चिरकाल तक आदर्श रूप में संचालित होती रहे, यह तपोभूमि अपनी विशिष्टता बनाये रख सके, समाज का नैतिक स्तर ऊँचा उठे, धर्म के प्रति सच्ची आस्था बनी रहे, इसी उद्देश्य से यह पत्रिका प्रकाशित की गई है। समिति भक्तजनों से सामर्थ्यानुकूल सहयोग की अपेक्षा करती है।

श्री दुर्गा मन्दिर सेवा समिति

गंगाघाट, उन्नाव



आजीवन
सहयोगी
सदस्यता
योजना

—: प्रस्तुति :—

श्री दुर्गा मन्दिर सेवा समिति, गंगाघाट, उन्नाव ।

श्री दुर्गा मन्दिर के विषय में आप परिचित हैं। यह भी ज्ञात है कि मंदिर अपनी विकासशील स्थिति में है। यह मंदिर अन्य मदिरों से अपनी विशिष्टता रखता है। सत्य-निष्ठ भावना से आप सभी द्वारा अब तक की जा रही सेवाओं के फलस्वरूप इसका उत्तरोत्तर विकास होता जा रहा है। वर्षभर आयोजित होने वाले धार्मिक अनुष्ठानों व नियमित सम्पन्न होने वाले उत्सवों पर अपार जनसमूह की भीड़ से इसकी गरिमा का परिचय प्राप्त होता है। प्रत्येक दर्शनार्थी अथवा मंदिर के नियमित सेवकों/साधकों का प्रमुख लक्ष्य सेवा-भाव का ही रहता है। यही नहीं सेवा कार्य बहुत ही शिष्ट पूर्ण ढंग व अनुशासित रूप से किया जाता है। परम् पूज्य श्री गुरु जी आध्यात्मिकता के आधार पर सभी का पूर्ण विकास कराने की ओर सदैव उत्प्रेरित करते रहते हैं तथा समय-समय पर स्वयं व सिद्ध पुरुषों द्वारा तत्सम्बन्ध में यथोचित जानकारी कराते रहते हैं।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सच्चा स्वरूप 'श्री दुर्गा मन्दिर' में मानवता के पुजारी श्री गुरू जी द्वारा चरितार्थ किया जा रहा है। वे सभी को जाति-पांति व भेद-भाव रहित होकर जीवन यापन हेतु न केवल उपदेश करते हैं, अपितु अपने ही सम्मुख व्यवहार करने में लगाते हैं। प्रति क्षण सभी को स्वावलम्बी जीवन हेतु कठिन परिश्रम किये जाने हेतु उत्प्रेरित कर मंदिर का कार्य (साफ–सफाई व पूजा-

अर्चन) करने में लगाते हैं। मंदिर की प्रगति की आधारशिला पूर्णतया शास्त्र–सम्मत विधि से दैनिक पूजन, अर्चन व यज्ञ-कर्म तथा श्रद्धा पूर्वक निःस्वार्थ भाव से की जाने वाली आप सभी की तन-मन-धन की सेवा है। वर्ष भर विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठानों एवं आयोजित होने वाले महोत्सवों पर भक्त समुदाय द्वारा सामूहिक भजन कीर्तन व प्रार्थनाओं के आधार पर ही यह तपोभूमि उत्तरोत्तर परम शान्ति का स्थल बनती जा रही है तथा इस स्थान की कीर्ति द्रुत गति से प्रसरित होती जा रही है।

मन्दिर की कार्यप्रणाली का विभाजन निम्न रूपों में किया गया है :—

१– दैनिक सेवा कर्म
२– वार्षिक महोत्सवों का आयोजन
३– विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठान
४– मन्दिर द्वारा सामाजिक कार्यों में योगदान
५– मन्दिर के विकास कार्य।

दैनिक सेवा कर्म :

दैनिक सेवा कार्य में मन्दिर की धुलाई, सफाई, प्रकाश व्यवस्था, महिमामयी मां श्री दुर्गा जी व प्रतिष्ठापित अन्य देव मूर्तियों का स्नान–पूजन व शृङ्गार आदि हैं। यह कार्य विद्या अर्जन करने वाले निर्धन छात्रों व अवैतनिक सेवकों

द्वारा श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न किये जाते हैं। आज तक पुजारी या वैतनिक सेवक रखने की कभी भी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती क्योंकि सारे कार्य विद्यार्थियों व सेवकों द्वारा सच्ची लगन एवं उत्साह पूर्वक पारस्परिक सहयोगिक भावना व निःस्वार्थ भाव से नित्य किये जाते हैं। विगत वर्षों से यह देखा जाता है कि प्रत्येक वर्ष ५-७ विद्यार्थियों को मन्दिर में नियमित भरण-पोषण एवं आवश्यक शिक्षा सम्बन्धी सुविधायें प्रदान की जाती हैं।

वार्षिक महोत्सव :

वर्ष में पड़ने वाले दोनों नवरात्रि, बसन्त पञ्चमी, गणेश चतुर्थी, भगवान श्री दत्तात्रेय जयन्ती, हनुमान जयंती, महाशिव रात्रि, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजन, संक्रान्ति-पर्व, ग्रहण पर्व, शरद पूर्णिमा व गुरु पूर्णिमा आदि प्रमुख उत्सव बड़े ही उल्लास पूर्वक व शास्त्र-सम्मत विधि से सम्पादित किये जाते हैं। इन उत्सवों पर श्रद्धालु भक्तजन अपनी सामर्थ्यानुसार तन-मन-धन की सेवायें अर्पण करते हैं तथा अपनी सेवाओं से समय-समय पर एकत्र होने वाले जन-समूह को आदर्श सामाजिक व धार्मिक जीवन यापन हेतु उत्प्रेरित करते हैं जिससे स्वकल्याण के साथ-साथ जन कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है और सम अथवा विषम परिस्थितियों में धैर्य पूर्वक जीवन संघर्ष करने का बल तो मिलता ही है

तथा समाज में नैतिक उत्थान की भावना जाग्रत होती है। इन महोत्सवों पर सामूहिक भजन कीर्तन व प्रार्थना पर अत्यधिक बल दिया जाता है। मन्दिर की प्रत्येक सेवा पूर्व निर्धारित समय पर ही सम्पन्न होती है क्योंकि पूज्य श्री गुरु जी समय के नियम के पालन तथा समय की सदुपयोगिता पर अत्यधिक बल देते हैं तथा वे स्वयं भी इसके अनु-पालक हैं। इन सामूहिक अनुष्ठानों व प्रार्थनाओं से हम अपनी लोप होती जा रही मूल संस्कृति व धार्मिकता से विमुखता के प्रति जनमानस में पुनर्जागृति के उद्देश्य की पूर्ति का लक्ष्य रखते हैं। राग-द्वेष से दूर सहिष्णुता की भावना के आधार पर जीवन यापन करने का अभ्यास हम सभी इन महोत्सवों पर सुसंगठित होकर करते हैं। उत्सवों के आयोजनों पर समिति को लम्बी राशि व्यय करनी पड़ती है जिसका मुख्य श्रोत आप सभी द्वारा यथोचित समय पर यथा सामर्थ्य श्रद्धापूर्वक किये जाने वाले आर्थिक सहयोगों पर आधारित है।

विशिष्ट धार्मिक अनुष्ठान :

प्रत्येक वर्ष समिति द्वारा विगत कुछ वर्षों से भागवत, सन्त सम्मेलन, महायज्ञ आदि जैसे बड़े धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन जन कल्याण व विश्व कल्याण की भावना से किया जाता है। इन अवसरों पर जनहित की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक व भजन कीर्तन के कार्यक्रम सम्पन्न

होते हैं जिसमें अपार जन समुदाय भाग लेता है। इन उत्सवों पर सभी लोग छोटे-बड़े व पद-मान का भेद-भाव भुलाकर एकजुट होकर कार्य करते हैं। सेवा कार्य चाहे वह जूता–चप्पल के रखरखाव की सेवा हो, मन्दिर की सफाई की सेवा हो, देव मूर्तियों का पूजन–अर्चन हो अथवा यज्ञ कर्म हो, सभी को बराबर महत्व दिया जाता है अर्थात् किसी प्रकार का श्रेणी विभाजन नहीं है। यही स्थिति सेवकों की भी है। कुछ देर पूर्व दर्शनार्थियों के जूता-चप्पलों का रख–रखाव करने वाला सेवक आरती व यज्ञ कर्म भी करता है। दयामयी मां के दरबार में गरीबों के प्रति दया, समाज में विनय शीलता मधुरभाष्य व सदाचार की शिक्षा मिलती है, जिससे हम नैतिक जीवन का उत्थान कर सकने में समर्थ होते हैं।

सामाजिक कार्यों में योगदान :

प्रत्येक वर्ष समिति द्वारा बिना दहेज के विवाह, मुण्डन व उपनयन संस्कारों के पावन कार्यों को सम्पन्न किया जाता है। इन व्यवस्थाओं पर यथा सामर्थ्य अधिकाधिक धन का व्यय किया जाता है। गरीबों को वस्त्रदान, अन्नदान का दायित्व नियमित रूप से समिति द्वारा वहन किया जाता है। मन्दिर में उपलब्ध सामग्री विवाहादि में जनता को निःशुल्क दी जाती है। अत्यधिक निर्धन जनों की कन्याओं के विवाह में यथा सम्भव आर्थिक मदद की जाती है। समिति राष्ट्र के

हित को ध्यान में रखकर ही मन्दिर के सारे कार्यों को सम्पन्न करती है।

विकास कार्य :

प्रबन्ध कारिणी समिति सदैव प्रयत्नशील रहती है कि दिन-प्रतिदिन मंदिर में दर्शनार्थ आनेवाले भक्त समुदाय को यथोचित सुविधायें उपलब्ध कराई जायें। विगत २-३ वर्षों में एक लम्बी धनराशि व्यय करके मंदिर के बगल व पीछे की भूमि को क्रय करके मंदिर के परिसर का विस्तार किया गया। संस्था की आय को बढ़ाने की दृष्टि से बगल की भूमि पर गोदाम बनवाकर किराये पर उठा दिया गया है जिससे वर्तमान में रुपया १३२५/- मासिक आय होने लगी है। पीछे की भूमि पर शीघ्र धर्म-शाला निर्माण कराये जाने हेतु भी कार्यकारिणी प्रयत्नशील है क्योंकि मन्दिर के पास कोई ऐसा सुविधाजनक स्थान नहीं है जहाँ साधू, सन्त एवं साधक व धर्म में रुचि रखने वाले लोग कुछ समय शांति पूर्वक वास कर सकें।

समिति द्वारा पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं/स्मारिकाओं में श्री दुर्गा मन्दिर के निकट भविष्य में प्रस्तावित कार्यों जैसे [१] एक आदर्श विद्यालय का खोला जाना [२] धर्मार्थ आयुर्वेदिक/होम्यो पैथिक औषधालय प्रारम्भ किया जाना [३] स्त्री-कल्याण हेतु सिलाई एवं कढ़ाई केन्द्र की स्थापना [४] मंदिर की ओर से एक मासिक पत्रिका सम्पादित किया

जाना आदि के विषय में उल्लेख किया जाता रहा है। इन प्रस्तावित कार्यों में प्रतिवर्ष नियमित रूप से एक लम्बी धन राशि का व्यय वहन करना पड़ेगा तथा प्रारम्भ करते समय ही व्यय का लम्बा दायित्व वहन करना पड़ेगा। पर्याप्त संसाधनों, नियमित आय के श्रोतों के अभाव में उपरोक्त कार्यों के संचालन में इस दिशा में विलम्ब हो रहा है।

मन्दिर में अब तक धार्मिक कार्यों पर अधिक बल दिया जाता रहा है, परन्तु पिछले वर्ष जनहित को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया कि समानान्तर धर्मार्थ कार्यों पर बल देना वर्तमान में आवश्यक है। अतः कार्यरत श्री दुर्गा मन्दिर सेवा समिति के समानान्तर पूज्य श्री गुरुजी ने 'श्री दुर्गामन्दिर धर्मार्थ समिति' का पंजीयन करा कर शुभारम्भ कर दिया तथा इस समिति को आयकर अधिनियम की धारा ८० जी में आयकर से मुक्त होने का प्रमाण पत्र भी प्राप्त है। यद्यपि यह समिति विकास के प्रथम चरण में है परन्तु आशा है कि इसमें जन सहयोग प्राप्त होगा और प्रस्तावित कार्यों को शीघ्र ही प्रारम्भ किया जा सकेगा। यही नहीं अध्यक्ष श्री गुरुजी धर्मार्थ आयुर्वेदिक संस्थान हेतु प्रयास कर रहे हैं। १० एकड़ भूमि इस निमित्त प्राप्त हो चुकी है। चूंकि प्रस्ताव एक बहुत बड़ी आयुर्वेदिक संस्था का है जो समस्त राष्ट्र में अपना एक प्रमुख स्थान रख सकेगी, अतः प्रबंध आदि की दृष्टि से इसकी एक अलग से अन्य कार्य

कारिणी समिति बनाकर पंजीयन करवा लिया गया है श्री गुरुजी इस संस्था के भी संस्थापक हैं। आज कल वे मुख्यतः इस के संचालन हेतु केन्द्रित होकर अत्यधिक प्रयासरत हैं कि शीघ्रातिशीघ्र इसमें सफलता प्राप्त की जाय। देश के विभिन्न राज्यों में वे समय समय पर भ्रमण भी कर रहे हैं। निकट भविष्य में इस संस्था के संचालन की आशा शीघ्र ही की जा रही है।

प्रायः प्रत्येक संस्था धनागम का सुगम मार्ग यह चुनती है कि चन्दे की किताबें छपवा कर धन एकत्र करती है और इसका इतना बाहुल्य हो चुका है कि दाता एक बार अनुदान आदि देने में हिचकने लगता है अथवा उसके अन्तर में यह भाव उत्पन्न होते हैं कि आज कल लोगों ने चंदा एकत्र करने का व्यवसाय बना लिया है। श्री दुर्गा-मन्दिर द्वारा भी नियमित पर्याप्त संसाधनों के अभाव में समय समय पर अनुदान एकत्र किया जाता रहा है परन्तु यहां पर श्रद्धा प्रथम आधार शिला रही है तथा अब तक प्रयास यही रहा है कि जो अनुदान प्राप्त हो चाहे वह अल्प मात्रा में ही क्यों न हो कठिन परिश्रम से कमाया गया तथा श्रद्धा पूर्वक आर्थिक सहयोग की भावना से दिया गया धन ही इस पावन संस्था में लगे, क्योंकि इस तपस्थली को प्रारम्भ से ही परम शांति का स्थल बनाये जाने का उद्देश्य रखा गया है। बहुत कुछ मन्दिर निर्माण कार्य उपवास वृत्त करते हुये स्वयं

श्रद्धालु जनता द्वारा "हरिः ॐ तत् सत्" महामन्त्र का सस्वर उच्चारण करते हुए स्वयं ईंट-गारा अपने सिर पर ढोकर किया गया है। मंदिर की प्रत्येक ईंट लाखों महामन्त्रों से अभिमन्त्रित लगी है। समिति प्रत्येक दर्शनार्थी से यह अपेक्षा करती है कि जब भी माँ के प्रांगण में पधारे तो प्रमुख द्वार में प्रवेश करते समय उसके अन्तर में यह भाव जागृत हो कि यह स्वयं उसका अपना स्थान है इसके सेवक-स्वामी, पुजारी या व्यवस्थापक वही तो हैं, और इस प्रकार अपने-अपने कर्तव्यों का निर्धारण स्वयं कर प्रत्येक अपने दायित्वों का यथा सम्भव निर्वाह कर प्रतिक्षण इसके उत्थान के लिए सजग रहे। यह काम स्वार्थ-निष्परायणता, त्याग की भावना व सहिष्णुता के आधार पर ही सम्पन्न हो सकता है। इससे अपना आत्मिक उत्थान तो होता ही है साथ ही लोक-कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त होता है। स्मरण रहे कि देव-मूर्ति पर पूजन अर्चन कर लेने, रामायण व गीता का पाठ कर लेने या यज्ञ में आहुति छोड़ देने मात्र से ही कोई धर्म निष्ठ नहीं हो जाया करता, अपितु व्यवहारिक जगत में सदाचारी होने की आवश्यकता अपेक्षाकृत अत्यधिक महत्व-पूर्ण एवं आत्मोन्नति का प्रथम सोपान है।

आजीवन सहयोगी सदस्यता योजन

पूज्य श्री गुरु जी ने पूर्वोक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखकर भावी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु समिति के सामने यह सुझाव रखा कि शीघ्रातिशीघ्र चन्दा एकत्र करने की प्रणाली अपनी संस्था द्वारा समाप्त कर देनी चाहिए। इसके स्थान पर उन्होंने एक योजना प्रस्तुत की। श्री दुर्गा मन्दिर के प्रति सच्ची निष्ठा रखने वाले भक्त जन अगणित हैं तथा सेवाओं के प्रति ऊँचे भाव उन सभी के अन्दर विद्यमान है। अतः ऐसे श्रद्धालुजनों को इस संस्था का आजीवन सदस्य बनने हेतु उत्प्रेरित किया जाय। सदस्यता शुल्क को किसी राष्ट्रीय कृत बैंक में मूल रूप से सावधि जमा के रूप में जमा कर दिया जाय। उसे कभी भी व्यय न करके उससे अर्जित होने वाले व्याज से प्रत्येक सदस्य की ओर से किसी विशिष्ट दिन की मन्दिर की पूजा, अर्चन, अभिषेक, यज्ञकर्म व विद्यार्थियों आदि की सेवा होती रहे। इससे निरन्तर नियमित रूप से पावन कार्यों में धन का सदुपयोग होता रहेगा। समाज में चंदे के प्रति हीन भावना से बचा जा सकता है साथ ही संस्था दीर्घ कालिक क्रियाशील रहते हुए नियमित व सुचारु रूप से उत्थान करती रहेगी। इस प्रकार हम अपनी संस्था को आवश्यक व्यय हेतु नियमित साधन जुटा सकते हैं। धनागम के लिए आश्रित नहीं रहना

पड़ेगा, और हम प्रस्तावित कार्यों को शीघ्र ही संचालन करने में सक्षम हो सकेंगे। अतः समिति ने इस योजना हेतु निम्न लिखित विधान व नियमावली सुनिश्चित की है। योजना सुचारु रूप से पर्याप्त सदस्य बन जाने पर ही क्रियाशील हो सकेगी।

सदस्यता :

[क] प्रत्येक हिन्दू वयस्क स्त्री/पुरुष जो चरित्रवान हो एवं जिसका होश-हवास दुरुस्त हो संस्था का आजीवन सहयोगी सदस्य बन सकता है।

[ख] प्रत्येक हिन्दू स्त्री/पुरुष जो सदस्य बनना चाहता है उसे संलग्न निर्धारित प्रार्थना पत्र को भर कर आजीवन सहयोगी सदस्यता शुल्क रुपया एक हजार एक सौ एक मात्र नगद अथवा 'श्री दुर्गामन्दिर आजीवन सहयोगी सदस्यता कोष' के नाम एकाउन्ट पेयी चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा समिति को प्रेषित करना होगा।

[ग] सदस्यता सम्बन्धी समस्त औपचारिकतायें पूर्ण होने पर समिति के अनुमोदन के पश्चात् अध्यक्ष द्वारा स्थायी आजीवन सहयोगी सदस्यता प्रदान की जायेगी।

[घ] एक बार आजीवन सहयोगी सदस्य बन जाने पर पुनः किसी प्रकार का शुल्क इस मद में जीवन पर्यन्त नहीं देना होगा। प्राथमिकता आजीवन सहयोगी सदस्यों की सेवाओं को देने के साथ ही जन साधारण की सेवायें भी सम्मिलित की जाती रहेंगी।

[ङ] आजीवन सहयोगी सदस्य को मताधिकार प्राप्त न होगा साथ ही उसे किसी भी कार्य-व्यवस्था में हस्तक्षेप करने का भी कोई अधिकार नहीं होगा।

कार्य प्रणाली :—

सभी कार्य प्रबन्धकारिणी समिति के नियमानुसार ही किये जा सकेंगे। प्रबन्धकारिणी समिति का मनोनयन पूर्व स्थिति अनुसार सामान्य क्रियाशील एवं आजीवन सहयोगी सदस्यों में से नियमानुसार अध्यक्ष महोदय द्वारा एक वित्तीय वर्ष के लिए संस्था की वार्षिक सामान्य बैठक में किया जा सकेगा। संस्था के समस्त कार्य वर्तमान कार्यरत कार्य कारिणी की नियमावली व विधानों के अनुरूप ही होंगे।

सुरक्षित संचयी कोष :—

(अ) आजीवन सहयोगी सदस्यता शुल्क समिति के निर्णयानुसार किसी राष्ट्रीय कृत बैंक में सावधि जमा के रूप

संस्था के हित में "श्री दुर्गा मन्दिर आजीवन सहयोगी सदस्यता कोष" के नाम जमा किया जायगा।

(ब) सामान्यता मूल धन व्यय हेतु बैंक से निकाला न जा सकेगा। बहुत ही असाधारण स्थितियों में यदि संस्था के सामने परिस्थिति उत्पन्न हो जाये कि एकाएक संस्था को भारी क्षति उठाना पड़ जाये और इससे संस्था का ह्रास होने लगे तो संस्था के सहायतार्थ समिति के अध्यक्ष एवं तीन चौथाई सदस्यों की सहमति से समिति के नियमानुसार एक चौथाई राशि तक आहरण कर संस्था के हित में व्यय किया जा सकता है। परन्तु आहरित की गई मूल धन राशि को यथा शीघ्र पुनः बैंक में जमा करना अनिवार्य होगा। जबतक पूर्वोक्त परिस्थितियों में आहरित की गई मूल धन राशि जमा न कर दी गई हो तथा आहरित की गई धन राशि की सदुपयोगिता संस्था के हित में कार्य-कारिणी द्वारा प्रमाणित न की गई हो तब तक पुनः इस मद से धन का आहरण न किया जा सकेगा।

(स) प्रत्येक वर्ष आजीवन सहयोगी सदस्यता कोष में जमा धन राशि के व्याज को आहरण कर ही संस्था को दैनिक सेवाओं, वार्षिक महोत्सवों आदि के आयोजनों पर व्यय किया जायेगा।

(द) प्रत्येक वर्ष इस कोष में जमा की गई व आहरण

की जाने वाली धन राशि का समस्त विवरण सचिव की वार्षिक रिपोर्ट में दिया जाया करेगा।

हिसाब किताब :—

(क) संस्था का समस्त हिसाब किताब जिसमें आजीवन सहयोगी सदस्यता कोष भी सम्मिलित रहेगा पूर्व की भाँति ही चार्टर्ड एकाउन्टेन्टस से आडिट करवाने के उपरान्त आयकर विभाग को प्रस्तुत किया जायेगा।

(ख) आजीवन सहयोगी सदस्यता कोष का लेजर तथा रसीदबुक आदि अभिलेख नियमित रूप से तैयार किये जायेंगे।

विशिष्ट पर्वों की सेवा

मंदिर में प्रतिस्थापित आराध्य देवों के विशिष्ट उत्सवों पर सेवा के आकाँक्षित भक्त जनों द्वारा निम्न लिखित रूप में उपरोक्त सदस्यता शुल्क के अतिरिक्त धन राशि जमा किए जाने पर आजीवन उस निमित्त उनकी ओर से सेवा होती रहेगी।

१– प्रत्येक नवरात्रि की महाष्टमी की सेवा रु० २५००/–
२– नवरात्रि के प्रति दिन की सेवा रु० २१००/–
३– शिवरात्रि पर शिवार्चन की सेवा रु० ११०१/–
४– भगवान दत्तात्रेय जयंती पर पूजन रु० ११०१/–
५– गणेश चतुर्थी पर अभिषेक
व गणेशअथर्वशीर्ष पाठ रु० ११०१/–

६– हनुमान जयंती रु० ११०१/–
७– दीपावली में महालक्ष्मी पूजन रु० २१००/–

दैनिक सेवाकार्य प्रातः एवं सायं सम्पन्न किया जाता हैं। प्रातः मन्दिर ४-३० बजे खुलता है रात्रि में १० बजे बन्द होता है। दिन में श्री दुर्गामाताजी के चैनेल गेट में सुरक्षा की दृष्टि से ताला बन्द रखा जाता है लेकिन पारदर्शी होने से महिमामयी का दर्शन सभी को होता रहता है। दोनों समय सभी देव मूर्तियों का स्नान, पूजन, शृंगार, भोग-प्रसाद एवं आरती की सेवा की जाती है। मन्दिर की स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ब्रह्मबेला में नित्य वैदिकरीति से यज्ञ-कर्म सम्पन्न किया जाता है। दोनों समय विद्यार्थियों के भोजन की व्यवस्था की पूर्ति मां के भोग 'सात्विक कच्चा भोजन' से की जाती है। सायंकालीन आरती में एकत्र जन समुदाय को सामूहिक रूप में यथोचित प्रसाद वितरण किया जाता है। महिमामयी मां का अखण्डदीप, व अन्य समस्त देवताओं के समीप सायं दीप जलने के समय से रात्रि १०-३० बजे तक कड़ुआ तेल के दीपक, विद्युत की अनियमितता व अनिश्चितता के कारण नित्य पैट्रोमेक्स के जलाने व विद्युत आदि की व्यवस्था दर्शनार्थियों की सुविधा एवं सुरक्षा हेतु की जाती है।

उपरोक्त सभी सेवाओं पर अनुमानित औसत दैनिक व्यय लगभग २००/– रु० का होता है अतः समिति द्वारा चिरकाल

तक नियमित रूप से मन्दिर की सेवा कार्य चलते रहने की दृष्टि से उपरोक्त योजना में कुल १००१ आजीवन सहयोगी सदस्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। दैनिक अनुमानित आय-व्यय का विवरण निम्न प्रकार है :—

- आजीवन सहयोगीसदस्यता योजना से ब्याज के रूप में होने वाली अनुमानित दैनिक आय– रु० २००/–
- दैनिक सेवाओं पर किये जाने वाले अनुमानित व्यय का

विवरण	रु० पै०	
	४०–००	पूजन आरती व श्रृंगार आदि
	३५–००	भोग प्रसाद आदि
	३०–००	विद्यार्थियों की व्यवस्था
	३५–००	नित्य यज्ञकर्म
	५०–००	प्रकाश व्यवस्था
	५–००	सफाई आदि
	५–००	अन्य विविध व्यय
	२००–००	

समय-समय पर व्यय भार बढ़ने की दशा में उसकी पूर्ति संस्था द्वारा अन्य स्रोतों से प्राप्त आय से की जा सकेगी।

सेवा कार्य प्रातः एवं सायं नित्य दो सदस्यों की ओर किया जायेगा। प्रत्येक सप्ताह के सदस्यों की सेवा की सूची का उल्लेख पूर्व से सूचना-पट पर कर दिया जाया करेगा। किसी भी सदस्य की ओर से एक निर्धारित तिथि को की जाने

वाली सेवा उसके जीवन काल तक ही सीमित न रखकर अपितु इसका लक्ष्य अगली दो पीढ़ी तक का सुनिश्चित किया गया है। सदस्य चाहे स्थानीय हो अथवा बाह्य सभी को महाप्रसाद समिति की ओर से वार्षिक महापर्व के समय पहुँचाया जायेगा। विशिष्ट महोत्सवों की सेवाओं हेतु निर्धारित शुल्क की सेवा करने वाले भक्तजनों को सम्बन्धित महोत्सव सम्पन्न हो जाने के उपरांत महाप्रसाद यदि वे स्वयं उपस्थित हो सकने में किन्हीं कारणों से असमर्थ हैं तो उन तक पहुँचाने की व्यवस्था प्रबन्ध कारिणी समिति की ओर से की जायेगी।

समिति अपेक्षा रखती है कि भक्त जन किसी महोत्सव विशेष हेतु की गई आर्थिक सेवाओं के सुअवसर पर अपने परिवार के सदस्यों सहित पधार कर यजमान के रूप में आनन्द लें। इस निमित्त भी सूचना पट पर समय से पूर्व ही उल्लेख किया जा सकेगा। समिति की ओर से प्रत्येक वर्ष सम्पादित होने वाली स्मारिका में भी आजीवन सदस्यों एवं विशिष्ट उत्सवों हेतु सेवा किये जाने वाले भक्तजनों का उल्लेख किया जायेगा। यह एक दीर्घकालिक योजना है। उत्तर भारत में यह अपने ढंग की निराली योजना होगी विशेषत: दक्षिण भारत के मन्दिरों की व्यवस्था में यह योजनायें देखने को मिलती हैं। निश्चित संख्या में सदस्य बन जाने पर समुचित रूप में यह सेवा योजना क्रियान्वित की जा सकेगी इसके पूर्ण होने में ३ वर्ष की अवधि का लक्ष्य निर्धारित

किया गया है। कार्य-कारिणी की सर्व सम्मति से अध्यक्ष को यह अधिकार होगा कि योजना संचालन के समय उत्पन्न परिस्थितियों के अनुकूल व्यवस्था की दृष्टि से आवश्यक एवं उचित योजना की रूप रेखा, नियम व शर्तों में जो पूर्णतया संस्था के हित में हों, संशोधन/परिवर्तन कर सकेगा जिसकी पूर्व सूचना समस्त सदस्यों को भी दी जायेगी तथा उनकी सहमति भी प्राप्त की जायेगी।

समिति अपेक्षा करती है कि सभी श्रृद्धालु भक्त जन अपने कर्तव्यों को सुनिश्चित कर निर्धारित समय के पूर्व ही अपनी सदस्यता शीघ्रातिशीघ्र ग्रहण कर अनुग्रहीत करेंगे।





आजीवन सहयोगी सदस्यता योजना

सदस्यता-आवेदन-पत्र

स्थान.........................

दिनांक—.........................

अध्यक्ष,

श्री दुर्गा मन्दिर, सेवा समिति,

गंगाघाट, उन्नाव–२०६८६१ (उत्तर प्रदेश)

महोदय,

मैं ....पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री..
आयु............ वर्ष निवासी ....
श्री दुर्गा मन्दिर गंगाघाट देवस्थान की नियमित सेवा हेतु आपकी समिति द्वारा संचालित 'आजीवन सहयोगी सदस्यता योजना' का सहभागी होने का इच्छुक हूँ। मैंने इसकी नियमावली को भली भाँति समझ लिया है।

अतः वांछित आजीवन सहयोगी सदस्यता शुल्क दैनिक/विशिष्ट पर्व...—......................
सेवा हेतु सम्पूर्ण राशि..............................अथवा ३ वर्षों में ६ किश्तों में देय राशि....................
की प्रथम किश्त..............................रुपया/नकद/चेक/ड्राफ्ट संख्या..............................दिनांक....................
बैंक..............................द्वारा प्रेषित कर रहा हूं। कृपया धनराशि प्राप्ति की रसीद भेजने एवं आजीवन सहयोगी सदस्यता की स्वीकृति प्रदान करने की कृपा करें।

स्थायी पता :–

....

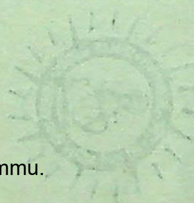
....

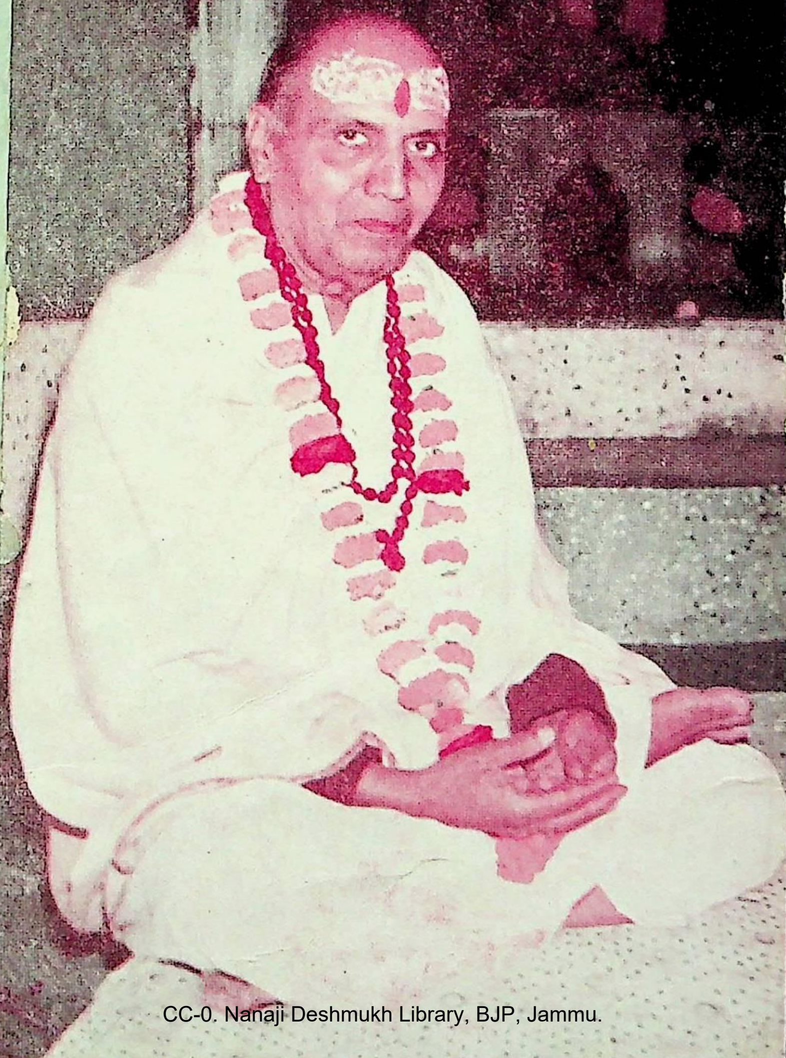
....

....

प्रार्थी :

(   )







प्रकाशक :—

श्री दुर्गा मन्दिर सेवा समिति, गंगाघाट, उन्नाव ।

आवरण मुद्रक : कृष्को प्रिन्टर्स एण्ड कार्टन मे""र्स, कानपुर ।